२१. सामूहिक जीवन के लिए व्यवस्थापन

बताओ तो

श्रद्‌धा, आयशा और एमिली इन तीनों के माता-पिता ने गरमी की छुट्‌टियों में सैर पर जाने का निश्चय किया । उसके लिए उन लोगों ने एक विशेष वाहन का भी प्रबंध किया । सैर पर निकलने वाले सभी सबेरे से बहुत समय तक बस की राह देखते रहे परंतु वह आई ही नहीं । टेलीफोन से पूछने पर मालूम हुआ कि सब लोग कहाँ एकत्र होंगे, यह बस के चालक को मालूम नहीं था । बस आने के बाद सब लोग सैर पर निकल पड़े ।

- क्या तुम्हें ऐसा लगता है कि पारिवारिक सैर में अव्यवस्था हुई है ? क्यों ?
- ऐसी अव्यवस्था दूर करने के लिए तुम कौन-सा उपाय बता सकते हो ?

कोई भी काम करने के लिए उसका न्यूनतम व्यवस्थापन करना आवश्यक होता है । व्यवस्थापन का क्या अर्थ है ? हम कोई काम कब, कहाँ, कैसे और किन लोगों की सहायता से करने वाले हैं, इसका प्रारूप तैयार करना व्यवस्थापन का पहला चरण है । यदि हम कोई काम अन्य लोगों के साथ करने वाले हैं तो इस प्रारूप को अधिक अचूक और सटीक बनाना पड़ता है । कौन-सा काम कौन करेगा; यह पूर्वनिर्धारित करना पड़ता है । प्रत्येक व्यक्ति को समझाना पड़ता है कि वह काम किस प्रकार करना है । इस बात की भी सावधानी तथा ध्यान रखना पड़ता है कि काम करने वाले लोगों में सही तालमेल बना रहे । देखरेख भी करनी पड़ती है कि प्रत्येक व्यक्ति सौंपा गया काम ठीक ढंग से कर रहा है या नहीं । हमें यह भी अनुमान लगाना पड़ता है कि अपने इस काम में कुल कितना खर्च करना पड़ेगा । ये सब बातें सही ढंग से होने पर वह काम पूर्ण होता है । यदि काम में किसी ने गलती की अथवा आलस्य किया तो वह काम ठीक ढंग से पूरा नहीं होता ।

यदि घर पर किसी सगे–संबंधी को भोजन के लिए बुलाया गया हो तो उसके लिए भी व्यवस्थापन करना पड़ता है । भोजन के लिए कौन–से पदार्थ बनाने हैं ? उसके लिए कौन–से सामान लाना पड़ेगा ? क्या वह सारा सामान घर में है अथवा खरीदना पड़ेगा ? अतिथि का स्वागत कैसे करना है ? ऐसी बहुत–सी बातें माता जी और पिता जी बारीकी से निश्चित करते हैं । निश्चित की हुई बातें अमल में भी लाते रहते हैं । सभी बातें पहले निश्चित करने और उसी के अनुसार कार्य करने पर कार्यक्रम अच्छी तरह संपन्न हो जाता है । यदि कोई बात भूल जाए अथवा कोई काम समय पर न हो पाए तो कार्यक्रम में अव्यवस्था हो जाती है ।

जरा सोचो, जब ऐसे छोटे–से कार्यक्रम में व्यवस्थापन आवश्यक है तो पाठशाला, गाँव, जिले, राज्य और देश जैसे स्थानों पर व्यवस्थापन कितना महत्त्वपूर्ण होता है !

क्या तुम जानते हो

यदि पढ़ाई का व्यवस्थापन करें तो पढ़ाई भी उत्तम हो सकती है । इसे कैसे किया जाए ?

- प्रतिदिन अपने पढ़ने का समय निर्धारित करो और उसका कड़ाई से पालन करो ।
- प्रति सप्ताह जो काम करने हों, उनकी एक सूची तैयार करो । (उदा. परिसर अध्ययन के प्रकरण ३ का अध्ययन अथवा गणित विषय में भिन्नों के जोड़ तथा घटाव के प्रश्न हल करना इत्यादि ।)
- निर्धारण के अनुसार ही सूची के सभी कार्य पूरे करना ।
- प्रत्येक विषय की पढ़ाई के लिए पर्याप्त समय रखना ।
- जो विषय कठिन लगता हो, उसकी पढ़ाई से बचना नहीं बल्कि उसकी पढ़ाई पहले करना।
- यदि खाली समय मिले तो उसी कठिन विषय की पढ़ाई करना ।
- खेलने, टीवी देखने, सोने तथा आराम के लिए भी विशेष और निश्चित समय निर्धारित करना परंतु उतना ही समय उन सभी को दें ।

बताओ तो

- अपने वर्ग के व्यवस्थापन के लिए तुम्हें कौन–से काम आवश्यक लगते हैं ?
- इन कामों को पूरा करने के लिए अपना वर्ग प्रतिनिधि (मॉनीटर) तुम कैसे चुनोगे ?

वर्ग की स्वच्छता ठीक से हुई या नहीं ? वर्ग में खड़िया (चॉक) तथा डस्टर हैं या नहीं ? इसकी नियमित रूप से जाँच करने की जिम्मेदारी अथवा श्यामपट पर सुविचार लिखने, वर्ग में अनुशासन रखने जैसे काम हम वर्ग प्रतिनिधि (मॉनीटर) के माध्यम से करते हैं । इसी प्रकार पाठशाला के अन्य काम सुचारु रूप से चलने के लिए सहायता देने के उद्देश्य से पाठशाला व्यवस्थापन समिति भी बनाई जाती है ।

पाठशाला व्यवस्थापन समिति में अभिभावक, शिक्षक, स्थानीय स्तर पर कुछ अन्य तज्ञ तथा विद्यार्थी प्रतिनिधियों का समावेश रहता है । विद्यार्थियों, अभिभावकों तथा शिक्षकों की कठिनाइयों

पर भी यह समिति ध्यान देती है । इन कठिनाइयों को दूर करने के लिए उचित मार्गदर्शन भी करती है । पाठशाला की प्रगति एवं विकास के लिए योजनाओं की सिफारिश करती है । पाठशाला में विद्‌यार्थियों की उपस्थिति पर भी ध्यान रखती है । दोपहर के भोजन तथा सरकारी आदेशों के पालन में सहायता करती है । संक्षेप में हम कह सकते हैं कि विद्‌यार्थियों के व्यक्तित्व के उत्तम विकास के लिए पाठशाला व्यवस्थापन समिति के शिक्षक तथा अभिभावक एक-दूसरे की सहायता करते हैं ।

- अपनी पाठशाला की पाठशाला व्यवस्थापन समिति की जानकारी प्राप्त करो ।

बताओ तो

- सड़क पर दुर्घटनाएँ क्यों होती हैं ?
- यातायात के नियमों का पालन क्यों करना चाहिए ?

प्रत्येक पाठशाला सदैव निश्चित समय पर ही क्यों शुरू होती है ? पाठशाला के सभी विषयों की समय-सारणी क्यों बनाई जाती है ? सड़क पर वाहन सदैव बाईं ओर से क्यों चलाए जाते हैं ? ऐसे प्रश्न तुम्हारे मन में आते होंगे ? मान लो कि पाठशाला शुरू होने का कोई निश्चित समय न हो, तो क्या होगा ? कोई कभी भी पाठशाला आएगा और घर चला जाएगा । इसके कारण यह भी समझ में नहीं आएगा कि पढ़ाई कब करनी है । यदि पढ़ाई की कोई समय-सारणी न हो तो प्रत्येक विद्‌यार्थी अलग-अलग पुस्तकें, कापियाँ लेकर विद्‌यालय में आए होते ।

नियमों के निर्माण से प्रत्येक व्यक्ति को एक दिशा प्राप्त होती है कि समाज में कौन-सा काम कब और कैसे किया जाए । इस बात का विश्वास प्राप्त होता है कि समाज का प्रत्येक व्यक्ति नियमों के अनुसार ही व्यवहार करेगा । उदाहरणार्थ, सड़क पर वाहन चलाते समय प्रत्येक व्यक्ति बाईं ओर से ही जाने वाला है, इसकी जानकारी होने के कारण हम भी निश्चिंत होकर वाहन चला सकते हैं परंतु सामने वाला चालक बाईं ओर से आने वाला है या दाहिनी ओर से, यदि हमें यह न ज्ञात हो तो वाहन चलाते समय हम स्वयं असमंजस में पड़ जाएँगे ।

समाज में कोई अव्यवस्था न हो और हमारा सामूहिक जीवन सरल ढंग से चलता रहे, इसके लिए कुछ नियम बनाए जाते हैं । पहले ये नियम समाज में प्रचलित प्रथाओं के अनुसार बनाए जाते थे। अब नियम सरकार बनाती है । स्वतंत्र होने के बाद हमारे देश ने अपना संविधान तैयार किया । देश का शासन कैसा होना चाहिए और समाज की प्रगति किस दिशा में होनी चाहिए; इस विषय के प्रावधान संविधान में अंकित होते हैं । हमारे द्वारा चुने गए प्रतिनिधि उसी संविधान के अनुसार देश का शासन चलाते हैं । स्थानीय स्तर पर चलने वाला प्रशासन स्थानीय शासन संस्थाओं के माध्यम से चलाया जाता है ।

बताओ तो

- तुम्हारे क्षेत्र में कौन-सी स्थानीय शासन संस्था काम करती है, इसकी जानकारी प्राप्त करो ।
- तुम्हारे घर अथवा विद्यालय के आसपास उनसे संबंधित नामपट्ट (जैसे, वार्ड का नाम, नगरसेवक, महापौर, सरपंच आदि के निवास, ग्राम पंचायत का कार्यालय इत्यादि) हैं क्या ? उन्हें खोजो ।

कुएँ पर पानी भरती हुई स्त्रियाँ

उद्यान

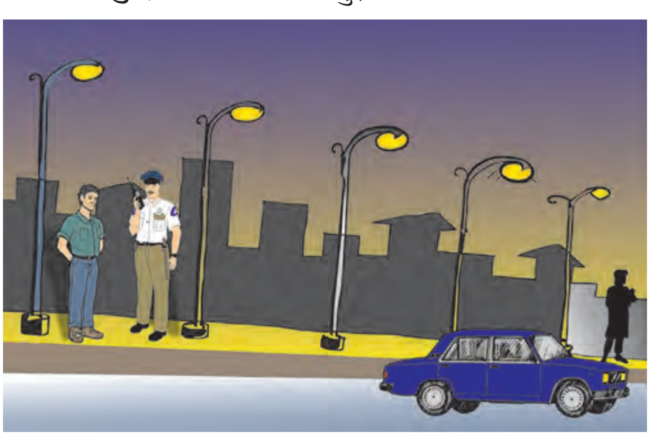

बिजली के खंभे

महानगर का कूड़ा-कचरा एकत्र करने वाला वाहन

दैनिक जीवन की बहुत-सी वस्तुओं के लिए हम अपने परिवार अथवा पड़ोसी के अतिरिक्त कुछ अन्य तथा बाहर के लोगों पर निर्भर होते हैं । पीने, स्वच्छता, खेती और पशुओं के लिए हमें पानी

की तथा अपने परिसर में प्रतिदिन एकत्र होने वाले कूड़े-कचरे की सफाई भी आवश्यक होती है । सड़कें बनाना, उनपर पर्याप्त प्रकाश होना, पाठशाला, अस्पताल, सार्वजनिक उद्‌यान जैसी विभिन्न आवश्यकताएँ भी होती हैं । इन सभी की पूर्ति का उत्तरदायित्व अपने क्षेत्र की स्थानीय शासन संस्था पर होती है। उसके लिए स्थानीय निवासी ही अपने प्रतिनिधि चुनकर शासन संस्था में भेजते हैं ।

हमने क्या सीखा

- कोई भी काम करने के लिए कम-से-कम (न्यूनतम) व्यवस्थापन आवश्यक है ।
- सामूहिक कामों के लिए विस्तृत प्रारूप बनाना आवश्यक होता है ।
- प्रारूप के अनुसार काम करने में सुविधा होती है और काम समय पर हो जाते हैं ।
- पाठशाला व्यवस्थापन समिति ऐसी संस्था है जो विद्‌यार्थियों के व्यक्तित्व के उत्तम विकास के लिए काम करती है ।
- लोगों को प्रतिदिन की सेवाओं की आपूर्ति करना और लोगों के दैनिक जीवन की कठिनाइयों को हल करना जैसे कार्य स्थानीय शासन संस्था करती है ।

स्वाध्याय

(अ) एक वाक्य में उत्तर लिखो :

(१) व्यवस्थापन का पहला चरण (पहली सीढ़ी) कौन-सा है ?
(२) नियम क्यों बनाए जाते हैं ?

I3UX78

(आ) रिक्त स्थानों की पूर्ति करो :

(१) कोई भी काम करने के लिए न्यूनतम .... आवश्यक होता है ।
(२) काम करने वालों के बीच .... बना रहे, इसपर ध्यान देना पड़ता है ।
(३) लोग स्थानीय शासन संस्थाओं के लिए अपने .... चुनकर देते हैं ।

(इ) अतिथि को भोजन के लिए निमंत्रित करने पर उसका व्यवस्थापन तुम कैसे करोगे :

उदा. भोजन के रूप में कौन-से खाद्‌यपदार्थ बनाने हैं ?
१. ....
२. ....

उपक्रम

- अपने खेलने और पढ़ने की दैनिक समय सारणी तैयार करो । अब यह भी नोट करो कि समय सारणी द्‌वारा तुम्हारी पढ़ाई-लिखाई समय पर होती है या नहीं ।
- अपने दिन भर के कामों का नियोजन करो । नियोजन द्‌वारा तुम्हें कौन-से लाभ हुए, इसकी चर्चा करो ।
- अपने क्षेत्र की किसी स्थानीय शासन संस्था के प्रतिनिधि को अपने वर्ग में निमंत्रित करके विद्‌यार्थियों के साथ उनके वार्तालाप तथा चर्चा का आयोजन करो ।

* * *